Roll No. : .....

Total Pages : 5

5381

M.A. (Final) Examination, 2016

HINDI LITERATURE

Paper – I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

(खण्ड-अ) [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-ब) [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-स) [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1.

(इकाई–I)

(i) आदिकाल को 'सिद्ध सामन्त काल' किसने कहा?

(ii) पृथ्वीराज रासो का अन्तिम भाग किसने पूरा किया?

(इकाई–II)

(iii) कबीर की मृत्यु किस संवत् में मानी जाती है?

(iv) संतौ आई आई ग्यान की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सभै .....।
रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(इकाई–III)

(v) 'सूर ह्वै के ऐसो काहे को घिघियात है' यह बात किसने कही?

(vi) भ्रमरगीत से क्या आशय है ?

(इकाई–IV)

(vii) तुलसीदास के माता-पिता का क्या नाम था ?

(viii) 'राम विहाय 'मरा' जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिल हू की' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(इकाई–V)

(ix) 'नहि पराग नहिं मधुर मधु' इस दोहे को बिहारी ने किसको लिख कर भेजा।

(x) घनानंद ब्रज आकर किस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए?

खण्ड-ब

(इकाई–I)

2. रासो साहित्य की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

अथवा

3. पृथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता व अप्रमाणिकता में दिए जाने वाले तर्कों को लिखिए।

(इकाई–II)

4. कबीर के रहस्यवाद को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

पंच संगी पिव पिव करैं, छठा जु सुमिरै मंन।
आई सूति कबीर की, पाया राम रतंन।।
कबीर सूतां क्या करै, सूतां होइ अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा, सुनत काल की गाज।।

(इकाई–III)

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मधुबनियाँ लोगनि को पतिआय?
मुख औरे अंतर्गत औरे पतियाँ लिखि पठवत हैं बनाय।।
ज्यों कोइलसुत काग जिआवत भाव-भगति भोजनहिं खवाय।
कुहकुहाय आए बसंत ऋतु, अंत मिलै कुल अपने जाय।।

अथवा

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

ऊधो। मन माने की बात।
जरत पतंग दीप में जैसे, औ फिरि फिरि लपटात।।
रहत चकोर पुहुमि पर, मधुकर! ससि अकास भरमात।
ऐसी ध्यान धरी हरिजू पै छन इत उत नहिं जात।।
दादुर रहत सदा जल-भीतर कमलहिं नहि नियरात।
काठ फोरि घर कियो मधुप तै बँधे अंबुज के पात।।

(इकाई–IV)

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

साँची कहौ कलिकाल कराल मैं, ढारो बिगारो तिहारो कहा है।
काम को, कोह को, लोभ को, मोह को मोहि सों आनि प्रपंच रहा है।
हौ जगनायक लायक आजु, पै मेरियौ टेव कुटेव महा है।
जानकीनाथ बिना, 'तुलसी' जग दूसरे सों करिहौं न हहा है।

अथवा

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

कीबे कहा, पढ़िवे को कहा? फल बूझि न बेद को भेद बिचारै।
स्वारथ को परमारथ को कलि कामद राम को नाम बिसारै।
बाद विवाद विषाद बढ़ाइ कै छाती पराई औ आपनी जारै।
चारिहु को, छहु को, नव को दस आठ को, पाठ कुकाठ ज्यों फारै।।

(इकाई–V)

10. बिहारी के दोहे भक्ति, नीति व श्रंगार की त्रिवेणी हैं, कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

11. 'घनानन्द रीतिकालीन स्वच्छंद काव्यधारा के शीर्षस्थ कवि माने जाते हैं' कथन की समीक्षा कीजिए।

खण्ड-स

(इकाई–I)

12. कबीर के निर्गुण-ब्रह्म को 'विरह को अंग' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(इकाई–II)

13. उद्धव की ज्ञान-योग की गोपियों ने कितनी कद्र की, कैसे व्यंग्य किए, उदाहरण सहित लिखिए।

(इकाई–III)

14. तुलसीदास के समन्वय-भावना को उदाहरण सहित लिखिए।

(इकाई–IV)

15. 'घनानन्द के काव्य में प्रेम की उत्कृष्टता तथा शृंगार का सम्यक् निर्वाह हुआ है', कथन की समीक्षा कीजिए।